मछलियों को तेल के कुएं पसंद हैं

समुद्र के अंदर किए गए एक अध्ययन में आश्चर्यजनक रूप से पता चला है कि तेल के कुओं के आसपास तथा प्लेटफॉर्म के नीचे मछलियां कहीं ज़्यादा उत्पादक होती हैं बनिस्बत समुद्र की कुदरती चट्टानों के। इस अध्ययन के मुखिया ऑक्सीडेंटल कॉलेज, लॉस एंजेल्स के जेरेमी क्लैस ने बताया है कि "यदि बराबर क्षेत्रफल की तुलना की जाए, तो अत्यंत उत्पादक समुद्री प्राकृतवासों के मुकाबले तेल कुएं के आसपास कहीं ज़्यादा मछलियां पाई जाती हैं।"

क्लैस की टीम ने 1995 से 2011 के बीच 16 तेल व गैस प्लेटफॉर्म्स तथा सात चट्टानी रीफ्स का सर्वेक्षण किया। उन्होंने यह पता लगाया कि प्रत्येक आवास में कितनी मछलियां हैं और किस साइज़ की मछलियां हैं। इसके आधार पर उन्होंने यह गणना की कि प्रति वर्ष प्रति वर्ग मीटर क्षेत्र में प्रत्येक क्षेत्र मछलियों के कितने वज़न को सहारा देता है। उन्होंने प्रत्येक संरचना (यानी तेल के कुएं या चट्टानी रीफ) के आसपास दो मीटर की दूरी तक को हिसाब में लिया था।

उनका निष्कर्ष है कि तेल कुओं के आसपास कहीं ज़्यादा मछलियां पाई जाती हैं। इन क्षेत्रों में मछलियों की उत्पादकता प्रति वर्ग मीटर 105 से 887 ग्राम है। यह चट्टानों के आसपास पाई गई उत्पादकता से 27 गुना ज़्यादा है।

शोधकर्ताओं ने अन्य कुदरती क्षेत्रों, खासकर सबसे उत्पादक क्षेत्रों के आंकड़ों से भी तेल के कुओं के आसपास मछली उत्पादकता की तुलना की। ऐसा एक क्षेत्र फ्रेंच पोलीनेसिया की मोऑरिया कोरल रीफ है। यहां मछली उत्पादकता 74.2 ग्राम प्रति वर्ग मीटर पाई गई है।

सवाल यह है कि इसकी व्याख्या क्या है। क्लैस का कहना है कि चट्टानी रीफ्स की बजाय तेल कुओं के ढांचे की जो संरचना होती है वह समुद्र की सतह से पेंदे तक फैली होती है। एक मायने में यह समुद्री गगनचुंबी इमारत है। प्लेटफॉर्म का ढांचा तमाम किस्म के अकशेरुकी जीवों को सहारा देता है। ये अकशेरुकी जीव मछलियों के लिए बढ़िया भोजन बन जाते हैं।

इसके अलावा, एक ही तेल कुएं में अलग-अलग स्तरों पर अलग-अलग किस्म की मछलियों का वास होता है। अर्थात भोजन की प्रचुरता और विविध प्राकृतवासों के चलते इन क्षेत्रों में मछलियां ज़्यादा पनपती हैं। ***(स्रोत फीचर्स)***